संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग

डॉ. नानासाहेब गोरे

प्रकाशक
ए.बी.एस.पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221 007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 08669132434
E-mail : abspublication@gmail.com

ISBN : 978-81-942193-4-7

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : 850.00 (आठ सौ पचास रुपये मात्र)

शब्द-संयोजन :
विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर

Sanchar Madhyamon Me Hindi Ka Prayog

Edited By : Dr. Nanasaheb Gore

Price : Rs. Eight Hundred Fifty Only.

22. हिन्दी न्यूज पोर्टल की लोकप्रियता : भाषा शैली की भूमिका 113
डॉ0 प्रदीप कुमार

23. हिंदी के विकास में राष्ट्रवाणी पत्रिका का योगदान 121
डॉ. प्रकाश गायकवाड

24. "हिंदी भाषा और जनसंचार माध्यम" 126
प्रा. डॉ. प्रणिता फड

25. जनसंचार और हिंदी . विज्ञापन 129
डॉ. रेखा मुळे कैवाडे

26. दूरदर्शन और हिंदी विज्ञापन 133
प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे

27. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर 138
डॉ. शेख नूर महंमद दाऊतभाई

28. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिन्दी की भूमिका 141
डॉ. सुलक्षणा जाधव–घुमरे

29. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग 144
डॉ. सुवर्णाबाला साहेब चिंचोलकर

30. जन संचार क्षेत्र में हिंदी 147
डॉ. विनोद श्रीराम जाधव

31. संवार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग विज्ञापन और हिंदी 155
डॉ. यशवंते एस.जे.

32. जन संचार माध्यमों में हिन्दी भाषा का स्वरूप 161
डॉ. भास्कर शिवलाल राठोड

24

"हिंदी भाषा और जनसंचार माध्यम"

प्रस्तावना –

भाषा एक ओर जहाँ बुनियादी जरूरतों के संप्रेषण का माध्यम बनती हुई निरंतर बदलती और विकसित होती रहती है, वहीं संस्कृति के कुछ शाश्वत मूल्यों की वाहक भी है। मनुष्य की नित बदलती जरूरतों की अभिव्यक्ति शब्दों में होती है पर इन्हीं शब्दों में मानव संवेदना के परंपरा संचित रूप भी निहित होते हैं। यह संचयन एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती है।[1]

मीडिया आधुनिक समाज के लिए एक अनिवार्य व्यवस्था है। वर्तमान में संचार प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। इसी पर आधारित जनसंचार एक पारिभाषिक शब्द बन गया है। जिसका प्रयोग मास मीडिया या मीडिया के अर्थ में किया जाता है। समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो, टी.वी., सिनेमा, कंप्यूटर इसके सशक्त माध्यम हैं। प्रत्येक संचार माध्यम की अपनी भाषा व शिल्प होता है। आज दृश्य–श्रव्य माध्यम सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा है।

सूचना एक शक्तिशाली अस्त्र है। ऐसी शक्ति से मनुष्य–मनुष्य को शक्तिशाली बनाने की भूमिका मीडिया निभा रहा है। जनसंचार माध्यमों के रूप में मीडिया जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व भी करता है और जनचेतना भी बन जाता है। जनसंचार माध्यमों के महत्व को रेखांकित करते हुए डॉ. अर्जुन तिवारी ने लिखा है– "समाज संस्कृति, साहित्य, दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार तथा मानव संघर्ष, कांति, प्रगति, दुर्गतिमय जीवन, सागर में उठनेवाले ज्वार–भाटा को दिग्दर्शित करने में जनसंचार माध्यम ही सक्षम है। जनता, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के ये सजग प्रहरी जनसंचार के ही साधन है जो हमें गरीबी का भूगोल, पूँजीपतियों का अर्थशास्त्र और नेताओं का समाजशास्त्र पढ़ाते हैं।"[2]

हिंदी भाषा और संचार माध्यम–

आज संचार माध्यम जिस भाषा का प्रयोग हिंदी के रूप में कर रहे हैं क्या वह अच्छी हिंदी है ? वह हिंदी ही है या कुछ और ? आलोचकों के अनुसार आज जनसंचार माध्यमों की भाषा हिंदी नहीं वरन 'हिंग्लिश' है। यानी हिंदी के

आदमी से दूर रहने के कारण भारतीय मानसिकता को गहराई से नहीं समझ पाते। भारतीय शब्दों को अंग्रेजी में अनुवाद करके ही समझते हैं।"[4]

दूसरी भाषा के शब्दों के प्रति इतना आग्रह इतनी उदारता और अपनी भाषा के प्रति इस उदासीनता के चलते कहीं अपनी भाषा ही न पराई लगने लगे। टेलीविजन, फिल्मों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग थोड़ा चल सकता है पर समाचार पत्रःपत्रिकाओं में भाषा की शुद्धता का ध्यान रखना अति आवश्यक है क्योंकि ये मानक भाषा का स्तर बनाए रखते हैं। पर वर्तमान परिदृश्य में समाचार पत्र–पत्रिकाएँ भी अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से परहेज नहीं कर रहे हैं, बल्कि इनमें इनका प्रयोग दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। यहाँ की भाषा के प्रति शुद्धता का आग्रह कमजोर पड़ता जा रहा है।

अब जनसंचार माध्यमों को भाषा के स्तर से ज्यादा मतलब नहीं है। उनकी भाषा अब वही है जो व्यवसाय की भाषा है। बाजार की भाषा है। जाहिर है वे हिंग्लिश या मिश्रित भाषा ही अपना रहे हैं जो भाषा पैसा दे वह उन्हें पसंद है। अब हिंदी की लिपि भी देवनागरी की बजाय रोमन हो रही है। मोबाइल के संदेश हों या विज्ञापनों में संदेश ये रोमन में ही लिखे जा रहे हैं।

निष्कर्ष :

आज का मीडिया हिंदी की क्षमता को जानने के बावजूद, उसका इस्तेमाल अपनी संकुचित दृष्टि से कर रहा है। फलतः जितनी तेजी से हिंदी बढ़ कर फैल रही है उतनी ही तेजी से उसका स्वरूप भी विकृत होता जा रहा है। मीडिया का प्रभाव क्षेत्र सर्वव्यापी है यदि वह जिम्मेदारी से अपनी भाषा के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह करे तो स्थायित्व को काफी हद तक पक्ष में किया जा सकता है। जरूरत मीडिया के जागरूक होकर कार्य करने और भाषा के प्रति जिम्मेदार होकर अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करने की है।

संदर्भ सूची :

1. हिंदी पत्रकारिता, मीडिया लेखन और भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ–अरूण वर्मा, पृष्ठ क्र. 24
2. जनसंचार और पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, पृष्ठ क्र. 1 आमुख
3. हिंदी पत्रकारिता, मीडिया लेखन और भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ–अरूण वर्मा, पृष्ठ क्र. 30
4. http://gulabkothari.wordpress.com/2009/08/04–गुलाब कोठारी

प्रा. डॉ. प्रणिता फड
(हिंदी विभाग)
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर
मो.नं. 8788100946

नाम : डॉ. नानासाहेब यशवंतराव गोरे

जन्म : 12 जून 1973, महापुर, ता. एवं जि. लातुर

शिक्षा : एम.ए. (स्वर्ण पदक प्राप्त), एम.फिल., पीएच.डी., सेट, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली का संक्षिप्त अनुवाद पाठ्यक्रम पूर्ण

प्रकाशित पुस्तकें : • हिंदी ॲब्सर्ड नाट्य साहित्य • सत्याग्रह : महात्मा गांधी का दृष्टिकोण (अनूदित) • गनीम (अनूदित काव्य संकलन) • स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-मराठी नाटक एवं रंगमंच (संपादित) • आधुनिक हिंदी-मराठी नाटक (संपादित)

नियुक्तियाँ : • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय 'इग्नू' अध्ययन केंद्र, जे.ई.एस. कॉलेज जालना में केंद्र समन्वयक (Co-ordinator) के रूप में कार्यरत • महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति मंडल, पुणे में समीक्षक के रूप में कार्य • स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के तहत् मॉडल कॉलेज की हिंदी पाठ्यक्रम समिति सदस्य के रूप में नियुक्त • केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा में हिंदी-मराठी अध्येता कोश निर्माण कार्य में नियुक्त • यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नाशिक के स्नातक हिंदी पाठ्यक्रम के परामर्शक (counselor) के रूप में नियुक्त • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अनुवाद (हिंदी) पाठ्यक्रम के परामर्शक (counselor) के रूप में नियुक्त

अन्य कार्य : • विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), नई दिल्ली की एक वृहद् तथा दो लघु शोध परियोजना पर कार्य • राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोधालेख प्रकाशित • राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग तथा शोधालेख प्रस्तुत • स्रोत व्यक्ति के रूप में महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के स्तर पर विशेष व्याख्यान

सम्प्रति : सहयोगी प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष तथा शोध निर्देशक, हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र, जे. ई.एस. महाविद्यालय, जालना

मो० : 9422219183

ई-मेल : nanasahebgore@gmail.com

ABS

ए.बी.एस. पब्लिकेशन

आशापुर, सारनाथ, वाराणसी - 221 007

मो० : (+91) 9450540654, 8669132434

E-mail : abspublication@gmail.com

/ AbsPublication

ISBN 978-81-942193-4-7

9 788194 219347 >

₹850/-

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

May 2020 Special Issue- 27 Vol. 1

RADIANCE

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Editor
Dr. Sunita Sangole
Dayanand College of Arts, Latur

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 27 Vol. 1 , RADIANCE

Editor - Dr. Sunita Sangole

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 400/-

Chief Editor – Arun Godam
Latur

Published BY
Shaurya Publication
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com , 8149668999

Printed By.
Shaurya Offset
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION : May 2020

11. Janta Curfew: An Attempt of Discourse Analysis 62
Prof. Doke Nitin Narayanrao

12. अलका सरावगी की कहानियों में हाशिए पर खड़ी स्त्री 66
डॉ. पुष्पलता अग्रवाल

13. "जागतिक महामारी – एक विश्लेषण" 71
प्रा.डॉ. स्वामी नितेश

14. Similarities in the Plays of Vijay Tendulkar and Satish Alekar: A Study 75
Dr Madhavi V. Kulkarni

15. दयानंद कला महाविद्यालयातील प्राध्यापक व कर्मचारी यांचा कोरोना प्रभावकाळातील 78
मनोसामाजिक अभ्यास
डॉ. अंजली जोशी – टेंभुर्णीकर,

16. बहुसंस्कृतिवाद म्हणजेकाय? 84
प्रा.डॉ.संतोष गुणवंतराव पाटील

17. Conceptual Analysis of Toni Morrison's Select Novels 89
Zample Vivek Baburao

18. सायबर गुन्हे – कोरोना व्हायरस आणि कायदाव सुव्यवस्था 93
प्रा. डॉ. खंदारे रामेश्वर माधवरा

19. जैनेंद्र कुमार की कहानियों में नारी समस्याएँ 97
डॉ. प्रणिता फड

20. कोरोना आणि जनसंपर्क यंत्रणा 100
प्रा. चैतन्य बाबुराव शिंदे

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 27 , Vol. 1	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
May 2020	SJIF	Impact Factor : 7.139

जैनेंद्र कुमार की कहानियों में नारी समस्याएँ

ता फड

भाग,दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

मनुष्य समाजशील प्राणी है। मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक व्यवस्था में रहकर अपना करता है। मनुष्य के कारण समाज का निर्माण हुआ है। धीरे-धीरे समाज ने कुछ नियम बनाएँ जिसका प्रयोग मानव करने ज्ञानी, अशिक्षित लोगों ने इसी सामाजिक पहलुओं को अधिक महत्व दिया। परिणामत: अंधश्रद्धा का निर्माण हुआ है। पुरुष प्रधान संस्कृति का भी निर्माण हुआ। आधुनिक काल के साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि का ो रहा है। इसके साथ-साथ शोषित, दलित और स्त्री-विमर्श को भी विषय बनाया जा रहा है। स्त्री-विमर्श सामाजिक नव की अपेक्षा रखता है। भारतीय समाज में परंपरा से नारी को द्वितीय स्थान दिया है। उसे परंपरा से ही दासी बनाकर रखा ो और सिर्फ एक भोग वस्तु के रूप में देखा जाता है। अतः वह समस्याओं का सामना नहीं कर पाती। जैनेंद्र कुमार की ाँ इसी बात की पहल करती है एवं नारी की समस्याओं को स्पष्ट करती हैं।

मस्या:

विधवा समस्या यह समाज की बहुत बड़ी समस्या है। हिंदू धर्म में इस समस्या का बहुत भयंकर रूप दिखाई देता है। ाज में विधवा का जीवन पशु से भी बदत्तर है । पति की मृत्यु के पश्चात वह पराजित एवं अपमानित जीवन जीने के लिए ोती है। इस संदर्भ में डॉ. रेखा कुलकर्णी का मत उल्लेखनीय है- "जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया के आदर, वं सम्मान की वस्तु है, उसी प्रकार भारत की विधवा जैसी तुच्छ, उपेक्षित, दयनीय, दुनिया की अन्य कोई वस्तु नहीं है। जैनेंद्र कुमार ने 'सजा' कहानी में विधवा समस्या का यथार्थ अंकन किया है। इस कहानी में मिसरानी विधवा है। वह समस्या से पीड़ित है। उसका लड़का आठवीं में पढ़ता है पर किताबें खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं है। इसलिए वह ती है। उसका पति मर चुका है। उसकी कोई सहायता भी नहीं करता इसलिए उसे मजबुरन चोरी करनी पड़ती है।

ाता की समस्या:

भारतीय समाज में कुँआरी माता को कलंकिनी माना जाता है। समाज उसकी ओर अनैतिकता एवं घृणा की दृष्टि से । साथ ही उससे उत्पन्न संतान को अवैध या नाजायज संतान कहा जाता है। समाज उसे स्वीकार नहीं करता और उसके ा व्यवहार किया जाता है।

रचनाकार ने 'दिल्ली में' इस कहानी में कुँआरी माता की समस्या को उजागर किया है। इस कहानी में रधिया अपना नने के लिए देती है, लेकिन वह अपने बच्चे के सिवा नहीं रह पाती। बच्चे को देखने के लिए जाती है पर कुँआरी माता होने वह समाज से डरती है। अंत में विवश होकर वह अपने प्राण त्याग देती है।

रचनाकार ने 'निस्तार' कहानी में कुँआरी माता की समस्या को उजागर किया है। इस कहानी की नायिका पुष्पा है। र्भवती है परंतु विवाह ना होने से छिपाना चाहती है। इस अपराध के डर से आत्महत्या करना चाहती है लेकिन ाद इस बात को जानकर अपने लड़के से सगाई कराते हैं।

है इसलिए विज्ञान प्रेम है। मूल और अप्रेम में जो उपयोगवादी औपचारिक कुशलता निकल सकती है, उतना ही मेरा ।"

इस प्रकार भिन्न-भिन्न देशों में मिशन युवतियों को भेजने का कार्य करते हैं। इस देश के पुरुषों की रूचि के अनुसार ी को बेचता है।

'बिखरी हुई कहानी' में नारी को पैसे का लालच एवं परिवार के इर्द-गिर्द रेखांकित किया है। इस कहानी में डॉ. सेन प्रेम करता है। भाभी उससे पैसे निकालने का व्यवहार करती है। भाभी डॉ. सेन के साथ-साथ अन्य पुरुषों से संबंध रखती सों के लिए नीति अनीति को भी नहीं देखती।

ी समस्या:

जैनेंद्र कुमार ने अपनी कहानियों में शराब की समस्या को भी चित्रित करने का प्रयास किया है। शराब पीना एक बुरी ? "शराब से व्यक्ति का शरीर, परिवार, पत्नी बच्चे एवं घर बर्बाद होता है। इसके पीछे अंधविश्वास एवं अज्ञान है। इसके यसनाधिनता बढ़ रही है, जिसके कारण कई स्वास्थ्य विषयक समस्याएँ पैदा हो गई है।

रचनाकार ने 'प्रियव्रत' कहानी में इसे रेखांकित किया है। प्रियव्रत एक सह संपादक, कवि एवं बुद्धिमान व्यक्ति है किंतु की आदत से निकम्मा बन जाता है। प्रियव्रत का परिवार शराब के कारण नरकीय यातना भोगता है। उसकी सेवा ली दयाभाव पर झूठा आरोप लगाकर दुराचारीनी कहता है।

त:

कहना सही होगा कि, भारतीय समाज में नारी की कहानी विषम एवं विसंगतपूर्ण है। पुरुष प्रधान संस्कृति ने सामाजिक में बांधकर उसकी स्थिति दयनीय बना दी है। परिणाम स्वरूप उसे जीवनभर अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। इसे मार ने अपनी कहानियों में बड़े मार्मिकता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

केत सूची:

हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी - डॉ. रेखा कुलकर्णी

जैनेंद्र कुमार की कहानियाँ - भाग - 4

जैनेंद्र कुमार की कहानियाँ - भाग - 9

Current Global Reviewer

Indexed (SJIF)

ISSN 2319-8648

Impact Factor- 7.139

Chief Editor
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

भारतीय साहित्य की चिन्तन भूमि

डॉ. संतोष गिरहे
डॉ. निखिलेश यादव

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : + 91 9968084132, + 917982072594
arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SAHITYA KI CHINTAN BHOOMI
Edited by Dr. Santosh Girhe & Dr. Nikhilesh Yadav

ISBN : 978-93-88130-15-8
Criticism

© सम्पादकद्वय एवं लेखकगण

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : ₹ 675

ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

मानव, साहित्य और समाज 68
—डॉ. राममनोहर अं. मिश्रा

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य 72
—प्रा. डॉ. प्रणिता फड

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 76
—बिन्दु ठाकुर, अशोक कुमार

भारतीय साहित्य की अवधारणा 80
—डॉ. हीरालाल शर्मा, डॉ. इसाबेला लकड़ा

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ 84
—डॉ. आर. एस. बांगड

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ 88
—डॉ. मधुलता व्यास

जीवन-मूल्यों की शिक्षा और नये भारत का निर्माण 92
—डॉ. अनुसुईया अग्रवाल

हिन्दी साहित्य में उद्घाटित सामाजिक दिशाएँ 96
—राजकुमार लहरे

भारतीय साहित्य की अवधारणा : एक सिंहावलोकन 100
—डॉ. शक्तिराज

भारतीयता का समाजशास्त्र 104
—हर्षराज गुलाबराव पाटिल

भारतीय साहित्य का मूल स्वर 108
—नगिता रामटेके

भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ 112
—डॉ. पायल कश्यप

भारतीय साहित्य की अवधरणा 116
—श्रीगीरे जयश्री बालाजी

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर 120
—प्रा. डॉ. परिवर्तिका अंबादे

भारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य

प्रा. डॉ. प्रणिता फड

साहित्य और जीवन-मूल्यों का बड़ा गहरा संबंध है। जीवन-मूल्यों की स्थापना से ही साहित्य अपने समय को लाँघकर कालजयी बनता है—"सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।" प्रश्न ये है कि वो क्या बात है? निश्चित रूप से उत्तर यही होना चाहिए कि भारतीय मूल्य, ये वो मूल्य हैं जिन्होंने भारत, भारतीय और भारतीयता को टिकाए रखा है, कायम रखा है।

हमारे ऋषि-मनीषियों ने एक उदात्त जीवन-शैली, अनुभवजन्य अनुभूत समृद्ध संस्कारों की विरासत हमें दी है। जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप को धर्म के साथ जोड़कर उन्हें भावना प्रधान बना दिया है। उन्होंने जीवन को एक अंशिक अथवा अंगिक क्षेत्र में मोलने की बजाय समग्र रूप में तोला। जीवन को प्राकृतिक परिवेश में विशाल फलक पर देखा। इसलिए जहाँ 'वसुधैव कुटुंबकम्' की बात की, वहाँ धार्मिक स्वतंत्रता देते हुए धर्म को व्यक्ति की धारणा से जोड़ा। कहा—"धारणाद् धर्म हत्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।" इस प्रकार धर्म को नितांत व्यक्तिगत भावना से जोड़ते हुए एक धर्म निरपेक्ष समाज की संकल्पना की। परिणाम यह हुआ कि एकता, सातत्य और सबके साथ मिल जाने की भावना भारत की बहुरंगी संस्कृति के आधार बन गए। यही आज भी हमारी संस्कृति के शाश्वत मूल्य हैं।

मूल्य अपने मूल में, नीतिशास्त्रीय 'वैल्यू' का हिंदी रूपांतर है। मानवीय क्रियाओं में आचार, व्यवहार में अच्छाई या शिवत्व का मूल्य क्या है, इस पर नीतिशास्त्र में व्यापक रूप से विचार किया गया है। भारतीय वाङ्मय में धृति, क्षमा, दया, अपरिग्रह, मुदिता, अपवित्रता, समता, परहित, सद्भावना आदि धर्म के अंग बताए गए हैं और ये ही वस्तुतः जीवन के मूल्य हैं। विश्व में क्रियाशील विभिन्न शक्तियों को समझकर तद्नुरूप आचारण करना धर्म है। भारतीय संस्कृति का संदेश है—"स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः

सहाय, धर्मवीर भारती, श्रीकांत वर्मा, धुमिल आदि की रचनाओं में मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है।

मूल्यहीनता के घोर संकट काल में जी रही आज की युवा पीढ़ी इसी मूल्यहीन जीवन और समाज को इसी रूप में ग्रहण कर रही है। उसके जीवन जीने का यही ढंग हो गया है। अपने बुजुर्गों से प्राप्त शिक्षा उसे मखौल लगती है, पुस्तकों का सच उसे बांध नहीं पा रहा, क्योंकि जिए जा रहे जीवन को वह पुस्तकीय शिक्षा और मूल्यों से रिक्त पाता है। जीवन का सच उसके समक्ष एक नए माहौल को रूबरू करता है, जिसमें इरादों और दावों का नाटक हैं, सच को सच कहने की हिचकिचाहट है।

निष्कर्षतः आज मूल्यों के विघटन ने मानवीयता को अंदर से खोखला बना दिया है। साहित्य जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा का सशक्त आधार है। मूल्य सिद्धि मानवीय अनुभवों द्वारा प्रथम जीवन में होती है फिर वही साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। आज जो मानव-विवेक और मूल्यों को लेकर असंख्य प्रश्न उभर रहे हैं, उनका समाधान आधुनिक कृतियाँ कहाँ तक दे पाती हैं यह भी विचारणीय है। भविष्य अभिनव मानवीय मूल्यों के लिए लालचित है, उसके लिए एक अमूल्य क्रांति, परिवर्तन तथा परंपराओ के शव का अंतिम संस्कार आवश्यक है। तब ही प्रेम, प्रज्ञा, पवित्रता एवं सत्यम् शिवम् सुंदरम् की सुनहरी फुलवारी सुवासित होगी। आज के यथार्थ मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में यही विधायिनी संकल्पना समाज के नवनिर्माण में साहित्य एवं शिक्षा का मूल आधार हो सकती है।

सन्दर्भ

1. 'मानविकी पारिभाषिक कोश'—दर्शन खंड, सं. डॉ. नगेंद्र, वी. एस नरवणे, पृ. 186
2. 'साहित्यमुखी'— रामधारीसिंह दिनकर, पृ. 56.
3. 'नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण'—डॉ. संगमलाल पांडेय, पृ. 304-305.
4. 'अशोक के फूल'—हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 179-180.
5. 'मूल्य मीमांसा'—गोविंद चंद पाण्डेय, पृ. 254.

ISBN 978-93-88130-15-8

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors

1/11829 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi-110032, Mob. 9968084132, 9910947941
e-mail: arpublishingco11@gmail.com